माध्यमिक स्तर पर रचनात्मकता उपलब्धि प्रेरणा और निजी स्कूल के छात्रों का तुलनात्मक अध्ययन

[1]अजीत कुमार सिंह, [2]डॉ. मोहम्मद रिजवान

[1]शोधार्थी, शिक्षा– विभाग, ओ.पी.जे.एस. विश्वविद्यालय, चुरु, राजस्थान, भारत
[2]शोध निर्देशक, सहायक प्रोफेसर, शिक्षा– विभाग, ओ.पी.जे.एस. विश्वविद्यालय, चुरु, राजस्थान, भारत

Email ID: *ajitgaurisingh0515@gmail.com*

Accepted: 03.07.2022 **Published**: 01.08.2022

मुख्य शब्दः रचनात्मकता, सहायता और माध्यमिक।

शोध आलेख सार

अध्ययन का केंद्रीय उद्देश्य माध्यमिक स्तर पर रचनात्मकता, उपलब्धि प्रेरणा और शैक्षणिक प्रदर्शन पर सरकारी, सहायता प्राप्त और निजी स्कूल के छात्रों की तुलना करना है। ''माध्यमिक स्तर पर सरकारी, सहायता प्राप्त और निजी स्कूल के छात्रों की रचनात्मकता में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है'' खारिज कर दिया जाता है। माध्यमिक स्तर पर सरकारी, सहायता प्राप्त और निजी स्कूल के छात्रों के बीच तुलना करने से पता चलता है कि निजी स्कूल के छात्र सरकारी और सहायता प्राप्त स्कूल के छात्रों की तुलना में अधिक रचनात्मक हैं। माध्यमिक स्तर पर सरकारी, सहायता प्राप्त और निजी स्कूल के छात्रों की उपलब्धि प्रेरणा में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है'' खारिज कर दिया जाता है। सरकारी, सहायता प्राप्त और निजी स्कूल के छात्रों की उपलब्धि प्रेरणा में महत्वपूर्ण अंतर है। सरकारी और सहायता प्राप्त स्कूली छात्रों की तुलना में निजी स्कूलों के छात्र अत्यधिक उपलब्धि प्रेरणा हैं। माध्यमिक स्तर पर सरकारी, सहायता प्राप्त और निजी स्कूल के छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है'' खारिज कर दिया जाता है। निजी स्कूल के छात्र सरकारी और सहायता प्राप्त स्कूल के छात्रों से अकादमिक प्रदर्शन में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हैं। ''सरकारी, सहायता प्राप्त और निजी स्कूल की छात्राओं के बीच उनकी रचनात्मकता के संबंध में माध्यमिक स्तर पर कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है'' खारिज कर दिया जाता है। सरकारी और सहायता प्राप्त स्कूल की छात्राओं की तुलना में निजी स्कूल की छात्राएं अधिक रचनात्मक होती हैं।

पहचान निशान

शिक्षा का कार्य सिर्फ जानकारी इकट्ठा करना, तथ्यों को बटोर कर उन्हे आपस में मिलाना तथा

अनुपयुक्त तथ्यों की मदद से या फिर कुतर्क की मदद से चीजों को सत्यापित करना नहीं है। बल्कि शिक्षा का कार्य तो ऐसे मनुष्य तैयार करना है जो स्वयं में पूर्ण एवं प्रज्ञाशील हो। हमारे वर्तमान समाज में प्रज्ञाशील हुए बिना भी हम डिग्री प्राप्त कर सकते हैं, यांत्रिक रूप से सक्षम हो सकते है, खुद को बाजार के मांग के अनुरूप प्रशिक्षित कर सकते है पर हम इस बात को कैसे झुठला सकते है कि प्रशिक्षण सिर्फ कार्यकुशलता लाता है, पूर्णता नहीं। जो है, उसे पूर्ण रूप से देख पाने की क्षमता जब तक विकसित नहीं होगी तब तक प्रज्ञाशीलता नहीं आएगी और प्रज्ञाशीलता के बिना शिक्षा अधूरी है। वैसे भी ऐसा विद्वान होने से क्या फायदा जो अपनी समझ अथवा बोध के लिए हमेशा जानकारियों एवं प्रमाण्य पर निर्भर रहता हो। वो समझ अथवा बोध भला जानकारियों से कहाँ आ पाती है, वो तो आत्मज्ञान से ही आ पाता है और आत्मज्ञान तभी आ सकता है जब हम स्वयं के होने के प्रति सजग हो, अपनी पूरी मानसिक प्रक्रिया के प्रति सजग हो और जब ऐसा होगा तभी हमारे व्यवहार में एक सकारात्मक बदलाव आ पाएगा, तभी हमारी चेतना संकीर्णता के बंधनों से मुक्त हो पाएगी। वास्तव में ये सही शिक्षा होगी।

जब कोई व्यक्ति अनियंत्रित वातावरण में शिक्षा ग्रहण करता है तो उसे व्यापक शिक्षा कहा जाता है। इसका अर्थ ये है कि व्यक्ति जन्म से लेकर मृत्यु तक अपनी प्रकृति के अनुसार विभिन्न प्रकार के अनुभव प्राप्त करता है और उसी के अनुसार खुद को बदलता रहता है। ये सिलैबस की बंधनों से मुक्त होता है और यहाँ सभी शिक्षक भी होता है और विद्यार्थी भी। इस तरह से किसी व्यक्ति का प्राकृतिक विकास होता है। इसकी भी आलोचना ये कह कर की जाती है कि चूंकि ये प्रक्रिया अनियंत्रित होती है इसीलिए इससे समाज को वो व्यक्ति नहीं मिल पाता है जो उसे चाहिए होता है।

शिक्षा के विभिन्न प्रकार

व्यवस्था, पाठ्यक्रम एवं शिक्षण पद्धति आदि की दृष्टि से शिक्षा को निम्नलिखित भागों में बांटा जा सकता है:–

1. औपचारिक शिक्षा

विद्यालयों, महाविद्यालयों आदि में चलने वाली शिक्षा औपचारिक शिक्षा कहलाती है। ऐसा इसीलिए क्योंकि इस शिक्षा का उद्देश्य, सिलैबस और शिक्षण तरीका आदि, सभी योजनाबद्ध और निश्चित होता है। इस तरह की शिक्षा व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की आवश्यकताओं की पूर्ति करती है और यह व्यक्ति में ज्ञान और कौशल का विकास इस तरह से करती है ताकि वे किसी व्यवसाय या बाजार में काम करने योग्य हो सके।

2. अनौपचारिक शिक्षा

व्यक्ति जन्म से लेकर मृत्यु तक अपनी प्रकृति के अनुसार विभिन्न प्रकार के अनुभव प्राप्त करता है और उसी के अनुसार खुद को शिक्षित करता रहता है। ये सिलैबस की बंधनों से मुक्त होता है, इसकी कोई योजना नहीं बनाई जाती और इसका कोई उद्देश्य भी निश्चित नहीं होता है। इसीलिए इसे अनौपचारिक शिक्षा कहा जाता है।

3. निरौपचारिक शिक्षा

ऐसे लोग जो उम्र निकल जाने के कारण से या औपचारिक शिक्षा में धन, समय और ऊर्जा नहीं लगाने के उद्देश्य से या फिर किसी अन्य कारण से नियमित महाविद्यालयों या विश्वविद्यालयों से शिक्षा

नहीं ले पाते हैं उसके लिए निरौपचारिक शिक्षा का प्रावधान किया जाता है। इसका पाठ्यक्रम तो होता है लेकिन वो बहुत ही लचीला और सीखने वालों को ध्यान में रखकर तैयार किया जाता है। सीखने वाला जब चाहे अपने समय के अनुसार इसमें भाग ले सकता है।

साहित्य की समीक्षा

(नारायणन, 2018)''निजी उच्च शिक्षा संस्थान, मलेशिया में छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन के लिए शिक्षण और सीखने के तरीकों में रचनात्मकता और नवाचार के बीच संबंध पर एक अध्ययन'' इस अध्ययन के निष्कर्षों से पता चला कि छात्र अलग–अलग शिक्षण विधियों को पसंद करते हैं और वे भी अलग–अलग शिक्षण विधियों को पसंद करते हैं।

(चंद्रशेखरन, 2013)''तमिलनाडु में उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की रचनात्मकता और अकादमिक उपलब्धि'' ने हाई स्कूल में छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि के बारे में बात की, जो रचनात्मकता स्कोर के साथ (.50 से .70) दृढ़ता से संबंधित है, लेकिन एक अन्य अध्ययन में शोधकर्ताओं ने इस परिकल्पना का अनुभव किया कि रचनात्मकता और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच का संबंध काफी हद तक मानसिक गति घटक से जुड़ा था।

(नदीम, 2012)''उच्च और निम्न माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की रचनात्मक सोच क्षमताओं की तुलना'' ने जांच की कि रचनात्मकता अभी भी कई मनोवैज्ञानिकों के लिए परेशान है, कई सिद्धांत निर्माण को पूरी तरह से समझाने में असमर्थ हैं। रचनात्मक सोच में अनुसंधान को रचनात्मक उत्पाद, प्रक्रिया, व्यक्ति और स्थान (पर्यावरण) में विभाजित किया जा सकता है।

(नामी, 2014)''रचनात्मकता और अकादमिक उपलब्धि के बीच संबंध'' ने जांच की कि रचनात्मकता का शाब्दिक अर्थ है, ''निर्माण'', ''सृजन'' या ''रचनात्मक शक्ति'' और ''नए कार्यों को बनाने की शक्ति''। रचनात्मकता कुछ नया बनाने या अस्तित्व में लाने की क्षमता है, चाहे किसी समस्या का नया समाधान, कोई नई विधि या उपकरण या एक नई कलात्मक वस्तु या रूप।

(सुकर्डी, 2021)''शिक्षक कक्षा में माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की रचनात्मकता का विकास कैसे करते हैं?'' सुझाव दिया कि रचनात्मकता को स्कूल में पढ़ाया जाना आवश्यक है क्योंकि यह छात्रों के ज्ञान प्राप्त करने के तरीके को बदल सकता है, फिर उन्हें वास्तविक जीवन की समस्याओं को उपन्यास और उपयोगी तरीकों से दूर करने के लिए लागू कर सकता है।

(मेरांगिन, 2018)''डा नांग सिटी में हाई स्कूल के छात्रों की रचनात्मकता पर शोध'' ने बताया कि छात्रों को अब रचनात्मकता की विशेषताओं या तत्वों के बारे में बुनियादी जागरूकता है, लेकिन फिर भी रचनात्मकता के घटकों की गहरी समझ नहीं है। संबंध विश्लेषण से पता चलता है कि यदि छात्र रचनात्मकता के घटकों को समझते हैं, तो उन्हें पता चल जाएगा कि उन घटकों के आधार पर अपनी रचनात्मकता को कैसे सुधारना है।

(जीवरत्नम और वैष्णवी, 2017)''प्राथमिक स्कूल के बच्चों की रचनात्मक सोच और बुद्धि और शैक्षणिक उपलब्धि के साथ इसके संबंध पर एक अध्ययन'' ने संक्षेप में कहा कि रचनात्मक सोच क्षमता, एक दृ

ष्टिकोण और एक प्रक्रिया है, अच्छी शिक्षा, रचनात्मक अभिव्यक्ति के लिए उचित देखभाल और अवसरों का प्रावधान रचनात्मक दिमाग को प्रेरित और तेज कर सकता है और इस क्षेत्र में माता–पिता, समाज और शिक्षकों का महत्वपूर्ण योगदान है।

(अरोड़ा, 2014)''माध्यमिक स्तर के छात्रों के बीच वैज्ञानिक रचनात्मकता पर स्कूल के वातावरण का प्रभाव'' ने निष्कर्ष निकाला कि छात्रों के समग्र विकास के लिए, छात्रों के व्यवहार में वांछनीय परिवर्तन लाने और स्कूल को समुदाय और समाज के विकास के साधन के रूप में अच्छा और अनुकूल बनाने के लिए पर्यावरण एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस प्रकार के प्रदर्शन और विद्यालयी वातावरण में सकारात्मक सहसम्बन्ध पाया जाता है।

भारत में शिक्षा की समस्याएं

भारत में एक लंबे समय से शिक्षा संबंधी नीति प्रबंध तथा इसकी प्रकृति को लेकर विद्वानों के बीच बहस चलती रही है। समय–समय पर शिक्षा से संबंधित समस्याओं को दूर करने के लिए सरकार द्वारा अनेक प्रयत्न भी किए गए हैं। इसके बाद भी आज हमारी शिक्षा व्यवस्था में अनेक ऐसी गलतियां हैं जिन्हें दूर किए बिना शिक्षा को सामाजिकरण सामाजिक नियंत्रण तथा परिवर्तन का एक प्रभावपूर्ण साधन नहीं बनाया जा सकता है।

1. **प्रबंध तथा साधनों की समस्या–** हमारी शिक्षा की सबसे बड़ी समस्या एकरूपता का अभाव होना है। अनेक शिक्षा संस्थाओं का संचालन एवं विशेष धर्म, जाति अथवा भाषा के विकास को ध्यान में रखते हुए किया जा रहा है इसके फलस्वरूप शिक्षा के द्वारा सही लक्ष्य प्राप्त करना अत्यधिक कठिन हो जाता है।
2. **शिक्षा पर संपन्न वर्गों का प्रभुत्व–** वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में उन लोगों को उचित स्तर की शिक्षा प्राप्त करने के अधिकार अवसर मिल जाते हैं जो आर्थिक रूप से धनवान हैं। पब्लिक विद्यालय तथा निजी क्षेत्र द्वारा संचालित प्रौद्योगिक शिक्षा संस्थाओं द्वारा दी जाने वाली शिक्षा इतनी महंगी है कि सामान्य व्यक्ति इस शिक्षा का लाभ नहीं उठा पाते हैं।
3. **शिक्षा में नियोजन का अभाव–** स्वतंत्रता के बाद भारत में विभिन्न स्तर की शिक्षा संस्थाओं की संख्या में बहुत वृद्धि हुई है, लेकिन यह वृद्धि देश की जनसंख्या और छात्रों की बढ़ती हुई संख्या के दृष्टिकोण से बहुत कम है। आज भी शिक्षा का विकास किसी नियोजित नीति के आधार पर नहीं हो पा रहा है। अनेक क्षेत्रों में स्नातकों की भरमार होने के कारण बेरोजगारी बढ़ रही है।

विद्यालय का महत्त्व

निम्नलिखित पक्तिओं में हम विद्यालय के महत्त्व पर प्रकाश डाल रहे हैं–

- **विशाल सांस्कृतिक सम्पति–** वर्तमान युग में ज्ञान इतना अधिक विकसित हो गया है तथा सांस्कृतिक सम्पति भी इतनी विशाल हो गई है कि इनकी शिक्षा देना परिवार तथा अन्य अनौपचारिक साधनों के सामर्थ से परे की बात है। अब संस्कृति की

सुरक्षा, विकास तथा इसके प्रचार करने के लिए विद्यालय से अच्छा और कोई साधन नहीं है। इस दृष्टि से बालक की शिक्षा के लिए विद्यालय एक महत्वपूर्ण साधन है।

- **परिवार तथा विश्व को जोड़ने वाली कड़ी–** परिवार बालक में प्रेम, दया, सहानभूति, सहनशीलता, सहयोग, सेवा तथा अनुशासन एवं निःस्वार्थता आदि गुणों को विकसित करता है। परन्तु परिवार की चारदीवारी के चक्कर में पड़कर बालक के ये सारे गुण उसके निजी सम्बन्धियों तक सीमित ही रह जाते हैं। इससे उसका दृष्टिकोण संकुचित हो जाता है। विद्यालय बालक के पारिवारिक जीवन को बाह्य जीवन से जोड़ने वाली एक महत्वपूर्ण कड़ी है।
- **विशिष्ट वातावरण की व्यवस्था–** अनौपचारिक संस्थाओं द्वार दी गई शिक्षा किसी निश्चित योजना पर आधारित नहीं होती है। परिणामस्वरूप इन संस्थाओं का वातावरण इतना अस्पष्ट तथा विरोधी होता है कि उसका बालक के व्यक्तित्व पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। विद्यालय में एक निश्चित योजना के अनुसार एक विशिष्ट वातावरण प्रस्तुत किया जाता है जो अत्यन्त सरल, शुद्ध, नियमित, सुरुचिपूर्ण तथा सामान्य एवं व्यवस्थित होता है।

  ऐसे वातावरण में रहते हुए बालक का शारीरिक, मानसिक, नैतिक एवं व्यवसायिक सभी प्रकार का विकास होना सम्भव है। अतः विद्यालय बालक की शिक्षा का एक महत्वपूर्ण साधन है।

विद्यालय की धारणा

विद्यालय के विषय में दो धारणायें हैं। एक प्राचीन तथा दूसरी नविन। प्राचीन धारणा के अनुसार परम्परागत विद्यालय का जन्म हुआ था तथा नविन धारणा के अनुसार प्रगतिशील विद्यालय को स्थापित किया जाता है। अग्रलिखित पंक्तिओं में हम इन दोनों प्रकार के विद्यालय की अलग–अलग चर्चा कर रहे हैं–

परम्परागत विद्यालय

परम्परागत विद्यालय में केवल औपचारिक शिक्षा दी जाती है। इन विद्यालय का जन्म उसी समय से हुआ है जब से परिवार अपने कार्यों को करने में समर्थ हो गया था। पहले धर्म तथा राज्य अलग–अलग संस्थायें नहीं थी। अतः उस युग में धार्मिक नेता ही शिक्षक हुआ करते थे। उन शिक्षकों ने परम्परागत शिक्षा को इतना मूल्यवान बना दिया था कि उसके द्वारा होने वाला लाभ केवल उच्च वर्ग के लोगों को ही प्राप्त था। कालांतर में धर्म तथा राज्य अलग–अलग संस्थायें हो गई। शैने–शैनः राज्यों में जनतंत्रवादी दृष्टिकोण विकसित होने लगा। इधर तेरहवीं शताब्दी में कागज तथा पंद्रहवी शताब्दी में छापने के यंत्रों का अविष्कार हो गया जिसके परिणामस्वरूप जन–साधारण को भी इन विद्यालय में शिक्षा प्राप्त करने के अवसर मिलने लगे।

नविन अथवा प्रगतिशील विद्यालय

पेस्टालॉजी की भांति फ्रोबिल, हरबार्ट, मान्टेसरी, नन्न, पार्कहर्स्ट, एवं टैगोर आदि शिक्षाशास्त्री ने इस बात पर बल दिया की शिक्षा बालक के लिए है न की बालक शिक्षा के लिए। इन सभी शिक्षाशास्त्रियों ने परम्परागत विद्यालय की उस

नीरस तथा निर्जीव शिक्षा का विरोध किया जिसके अनुसार बालक की व्यक्तिगत विभिन्नता की अवहेलना करके उसके मस्तिष्क में ज्ञान को बलपूर्वक ठूंसने का प्रयास किया जाता था।

उपसंहार

''सरकारी, सहायता प्राप्त और निजी स्कूल की छात्राओं के बीच उनकी उपलब्धि प्रेरणा के संबंध में माध्यमिक स्तर पर कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है'' खारिज कर दिया जाता है। निजी स्कूल की छात्राएं सरकारी और सहायता प्राप्त स्कूल की छात्राओं की तुलना में अत्यधिक उपलब्धि प्रेरणा हैं।''सरकारी, सहायता प्राप्त और निजी स्कूल की छात्राओं के शैक्षणिक प्रदर्शन के संबंध में माध्यमिक स्तर पर कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है'' को खारिज कर दिया गया है। निजी स्कूल की छात्राओं का शैक्षणिक प्रदर्शन सहायता प्राप्त और सरकारी स्कूल की छात्राओं की तुलना में अधिक है। इसमें कहा गया है कि सरकारी और सहायता प्राप्त स्कूलों की छात्राएं अकादमिक प्रदर्शन के मामले में निजी स्कूल की छात्राओं से पिछड़ जाती हैं।

''सरकारी, सहायता प्राप्त और निजी स्कूल के छात्रों के बीच उनकी रचनात्मकता के संबंध में माध्यमिक स्तर पर कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है'', पुष्टि की जाती है कि निजी, सहायता प्राप्त और सरकारी स्कूल के लड़के रचनात्मकता पर अधिक समान थे। ''सरकारी, सहायता प्राप्त और निजी स्कूल के छात्रों के बीच उनकी उपलब्धि प्रेरणा के संबंध में माध्यमिक स्तर पर कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है'' खारिज कर दिया जाता है। निजी स्कूल के लड़के सरकारी और सहायता प्राप्त स्कूल के लड़कों की तुलना में अत्यधिक उपलब्धि प्रेरणा हैं।

''सरकारी, सहायता प्राप्त और निजी स्कूल के छात्रों के माध्यमिक स्तर पर उनके शैक्षणिक प्रदर्शन के संबंध में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है'' खारिज कर दिया जाता है। सरकारी, सहायता प्राप्त और निजी स्कूल के छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन में महत्वपूर्ण अंतर पाया गया। निजी स्कूल के लड़कों का शैक्षणिक प्रदर्शन सहायता प्राप्त और सरकारी स्कूल के लड़कों की तुलना में अधिक है।

संदर्भ

- अरोड़ा, एमएम (2014)। माध्यमिक स्तर के स्कूली छात्रों के बीच वैज्ञानिक रचनात्मकता पर स्कूल पर्यावरण का प्रभाव। रिसर्च पीडिया, 1(1), 48–57.
- चंद्रशेखरन, एस. (2013)। तमिलनाडु में हायर सेकेंडरी स्कूल के छात्रों की रचनात्मकता और शैक्षणिक उपलब्धि। मानविकी और सामाजिक विज्ञान आविष्कार के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, 3(8), 32–36।
- नदीम, एम।, सहायक, ए, और व्याख्याता, एसएस (2012)। हाई और लो अचीवर्स सेकेंडरी स्कूल के छात्रों की रचनात्मक सोच क्षमताओं की तुलना। इंटरनेशनल इंटरडिसिप्लिनरी जर्नल ऑफ एजुकेशन, 1(1), 3–8।
- नाडु, टी., सेवानिवृत्त, ए., नाडु, टी., और विवरण, ए. (2017)। माध्यमिक स्तर पर छात्रों की उपलब्धि प्रेरणा और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंध। 5(4), 70–75.

- नामी, वाई।, मार्सूली, एच।, और अशौरी, एम। (2014)। रचनात्मकता और अकादमिक उपलब्धि के बीच संबंध। प्रोसीडिया – सामाजिक और व्यवहार विज्ञान, 114, 36–39।
- नारायणन, एस। (2018)। निजी उच्च शिक्षा संस्थान, मलेशिया में छात्रों के अकादमिक प्रदर्शन की दिशा में शिक्षण और सीखने के तरीकों में रचनात्मकता और नवाचार के बीच संबंध पर एक अध्ययन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एकेडमिक रिसर्च इन बिजनेस एंड सोशल साइंसेज, 7(14), 1–10।
- सुकर्डी, आरआर, सोपंडी, डब्ल्यू।, और रियांडी। (2021)। शिक्षक कक्षा में माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की रचनात्मकता कैसे विकसित करते हैं? एआईपी सम्मेलन की कार्यवाही, 2331 (अप्रैल)।